Dainik Bhaskar (Indore), 20th August 2016, Page No. 05

जीएसआईटीएस के पास राजबाड़ा के सर्वे के लिए उपकरण नहीं

भास्कर संवाददाता | इंदौर

राजबाड़ा पर शोरगुल और कंपन से पड़ने वाले दुष्प्रभावों की जांच के लिए जीएसआईटीएस ने सर्वे के उपकरण नहीं होने की बात कही है। अब पुरातत्व विभाग आईआईटी से उम्मीद लगाए है कि वह यह सर्वे करे।

4 जुलाई को राजबाड़ा का एक बड़ा हिस्सा ढह गया था। पुरातत्व विभाग के विशेषज्ञों ने जांच कर बताया था कि लकड़ियां सड़ने और बारिश का पानी रिसने से भार बढ़ जाने से यह हिस्सा ढहा। विभाग ने राजबाड़ा के बाकी हिस्से को बचाने के लिए आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) की टीम से इसका निरीक्षण करवाया था। एएसआई ने रिपोर्ट पुरातत्व आयुक्त अजात शत्रु को सौंपी थी। इसमें पूर्व में सामने आए कारणों का उल्लेख करते हुए कहा गया कि आगे से ऐसी घटना नहीं हो, इसके लिए राजबाड़ा पर अंदर और बाहर होने वाले शोर व कंपन से पड़ रहे दुष्प्रभावों की जांच करवाते हुए जरूरी सुधार करवाना चाहिए।

आयुक्त ने इंदौर के आईआईटी और जीएसआईटीएस को पत्र लिखकर यह सर्वे करने की बात कही थी। इस मामले को देख रहे संभागायुक्त संजय दुबे ने बताया कि जीएसआईटीएस के विशेषज्ञों का कहना है कि उनके पास शोर और कंपन से राजबाड़ा पर होने वाले दुष्प्रभावों को मापने वाला कोई उपकरण नहीं है। उन्होंने बताया कि अब आईआईटी के जवाब का इंतजार किया जा रहा है।